13

श्रीललितासहस्रनामस्तोत्र-II

प्रिय शिक्षार्थी, पिछले पाठ में आपने जाना कि श्रीललितासहस्रनामस्तोत्र ब्रह्माण्ड पुराण का भाग है। तथा इसमें ह्यग्रीव तथा ऋषि अस्त्य के बीच संवाद है। यह स्तोत्र देवी ललिता के विषय में हैं। इसमें उनके 1000 नामों का उल्लेख किया गया है। उनमें से कुछ नाम आप पूर्व पाठ में पढ़ चुके है। इस पाठ में उनके अन्य नामों के विषय में जानेंगे।

उद्देश्य

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- सूक्त में दिये श्लोकों का शुद्ध उच्चारण कर पाने में;
- देवी ललीता की विशेषताएं बता पाने में; और
- उनके नामों का अर्थज्ञान कर पाने में ।

13.1 श्रीललितासहस्रनामस्तोत्र (26-37)

चक्रराज–रथारूढ–सर्वायुध–परिष्कृता ।

गेयचक्र–रथारूढ–मन्त्रिणी–परिसेविता ।। २६ ।।

68) चक्रराजरथारूढसर्वायुधपरिष्कृता – वह जो पूरी तरह से सशस्त्र है और नौ कहानियों के साथ श्रीचक्र रथ में सवार है

69) गेयचक्ररथारूढमन्त्रिणीपरिसेवीता – वह सात कहानियों के साथ रथ में सवार होती है और उसे मंथरिनी द्वारा सेवा दी जाती है जो संगीत की देवी है

किरिचक्र–रथारूढ–दण्डनाथा–पुरस्कृता ।

ज्वाला–मालिनिकाक्षिप्त–वह्निप्राकार–मध्यगा ।। २७ ।।

टिप्पणी

70) किरिचक्ररथारूढदण्डनाथापुरस्कृता – वह जो शक्ती से बच जाती है, जिसे दाणासनथ कहा जाता है, बैठा है। किरीचक्र रथ मेंवह जो पाँच कहानियों के साथ रथ में सवार होती है और देवी वरही द्वारा सेवा की जाती है अन्यथा धंधा नाथ कहलाती है

71) ज्वालामालिनिकाक्षिप्तवह्निप्राकारमध्यगा – वह जिसने किले के केंद्र में स्थान लिया हो देवी द्वारा बनाई गई आग, ज्वालामालिनि वह देवी ज्वालामलिनी द्वारा निर्मित अग्नि के किले के बीच में है

भण्डसैन्य–वधोद्युक्त–शक्ति–विक्रम–हर्षिता ।

नित्या–पराक्रमाटोप–निरीक्षण–समुत्सुका ।। २८ ।।

72) भण्डसैन्यवधोद्युक्तशक्तिविक्रमहर्षिता – वह शक्तियों की वीरता पर आनन्दित होती है जो आशय रखते हैं ईंछक्ोनतं की सेनाओं को नष्ट करने परवह जो विभिन्न शक्ति (सचमुच ताकत लेकिन एक देवी) से प्रसन्न था जिसने भांडासुर की सेना को मारने में मदद की

73) नित्यापराक्रमाटोपनिरीक्षणसमुत्सुका– वह जो नित्य देवता (सचमुच हर दिन की देवी) की वीरता को देखने में रुचि रखता है और खुश है

भण्डपुत्र–वधोद्युक्त–बाला–विक्रम–नन्दिता ।

मन्त्रिण्यम्बा–विरचित–विषङ्ग–वध–तोषिता ।। २६ ।।

74) भण्डपुत्रवधोद्युक्तबालाविक्रमनन्दिता – वह जो बांदा के बेटों को नष्ट करने में बाला देवी (उनकी बेटी) की वीरता से प्रसन्न था

75) मन्त्रिण्यम्बाविरचितविषुङ्गवधतोषिता – वह देवी मंथरिनी को देखकर खुश हो गई कि वह विशांगा को मार डाले

विशुक्र–प्राणहरण–वाराही–वीर्य–नन्दिता ।

कामेश्वर–मुखालोक–कल्पित–श्रीगणेश्वरा ।। ३० ।।

76) विशुक्रप्राणहरणवाराहीवीर्यनन्दिता – वह जो विशुका को मारने में वरही की वीरता की सराहना करता है

77) कामेश्वरमुखालोककल्पितश्रीगणेश्वरा – वह जो कामेश्वरा के मुख से एक निगाह द्वारा गणेश को जन्म देती ह ैउसने अपने भगवान, कामेश्वर के मुख के दर्शन मात्र से भगवान गणेश की रचना की

महागणेश–निर्भिन्न–विघ्नयन्त्र–प्रहर्षिता ।

भण्डासुरेन्द्र–निर्मुक्त–शस्त्र–प्रत्यस्त्र–वर्षिणी ।। ३१ ।।

टिप्पणी

78) महागणेशनिर्भिन्नविघ्नयन्त्रप्रहर्षिता – जो भगवान गणेश को देखकर प्रसन्न हो गए, उन्होंने विष्णु द्वारा बनाए गए विघ्न यंत्र (देरी का मतलब) को नष्ट कर दिया

79) भण्डासुरेन्द्रनिर्मुक्तशस्त्रप्रहर्षिता – वह जिसने बाणासुर के विरुद्ध बाणों की वर्षा की और तीरों से उत्तर दिया

कराङ्गुलि–नखोत्पन्न–नारायण–दशाकृतिः ।

महा–पाशुपतास्त्राग्नि–निर्दग्धासुर–सैनिका ।। ३२ ।।

80) कराङ्गुलिनखोत्पन्ननारायणदशाकृतिः – उसने अपने नाखूनों की नोक से नारायण के दस अवतारों का निर्माण किया

81) महापाशुपतास्त्राग्निनिर्दग्धासुरसैनिका – वह जिसने महा पशुपति बाण द्वारा असुरों की सेना को नष्ट कर दिया।

कामेश्वरास्त्र–निर्दग्ध–सभण्डासुर–शून्यका ।

ब्रह्मोपेन्द्र–महेन्द्रादि–देव–संस्तुत–वैभवा ।। ३३ ।।

82) कामेश्वरास्त्रनिर्दग्धसभण्डासुरशून्यका – उसने बांदासुर और उसके शहर को नष्ट कर दिया जिसे कामेश्वर बाण द्वारा सूर्याका कहा गया।

83) ब्रह्मोपेन्द्रमहेन्द्रादिदेवसंस्तुत वैभवा – वह जो भगवान ब्रह्मा, विष्णु, इंद्र और अन्य देवों द्वारा प्रार्थना की जाती है

हर–नेत्राग्नि–संदग्ध–काम–सञ्जीवनौषधिः ।

श्रीमद्वाग्भव–कूटैक–स्वरूप–मुख–पङ्कजा ।। ३४ ।।

84) हरनेत्राग्निसंदग्धकामसञ्जीवनौषधिः – वह जो प्रेम के देवता मनमथा को जीवन में वापस लाया, जो शिव की आँखों से आग से जलकर राख हो गया था

85) श्रीमद्वाग्भवकुटैकस्वरूपमुखपङ्कजा – वह जिसका कमल मुख विघ्न कूट है

कण्ठाधः–कटि–पर्यन्त–मध्यकूट–स्वरूपिणी ।

शक्ति–कूटैकतापन्न–कट्यधोभाग–धारिणी ।। ३५ ।।

86) कण्थाधःकटिपर्यन्तमध्यकूटस्वरूपिणी – वह जिसकी गर्दन से कूल्हों तक का हिस्सा माद्य कूटा है

87) शक्तिकुटैकतापन्नकट्यधोभागधारिणी – जिसके कूल्हों के नीचे का भाग वह शक्ति कूटा है

टिप्पणी

मूल–मन्त्रात्मिका मूलकूटत्रय–कलेबरा ।

कुलामृतैक–रसिका कुलसंकेत–पालिनी ।। ३६ ।।

88) मूलमन्त्रमिका – वह जो मूल मंत्र (मूल मंथरा) का अर्थ है या वह जो इसका कारण है

89) मूलकूटत्रकयकलेबरा – वह जिसका शरीर मूल मन्त्र के तीन भाग हैं प। इ। पंच दशाक्षरी मंथरा

90) कुलामृतैकरसिका – वह जो किसी को देखने, देखने और जो देखा जाता है, उसकी पवित्रता की चरम स्थिति का आनंद लेती है या वह जो मस्तिष्क के नीचे हजार पंखुड़ियों वाले कमल से बहते हुए अमृत को पीने में आनंद प्राप्त करती है।

91) कुलसंकेतपालिनी – वह जो शक्तिशाली सत्य को अनुपयुक्त लोगों में गिरने से बचाता है

कुलाङ्गना कुलान्तस्था कौलिनी कुलयोगिनी ।

अकुला समयान्तस्था समयाचार–तत्परा ।। ३७ ।।

92) कुलाङ्गना – वह जो सुसंस्कृत परिवार से जुड़ी महिला है या वह श्रीविद्या जैसी है, केवल उसी से जानी जाती है, जिसका वह है

93) कुलान्तस्था – वह जो किसी भी स्थान पर पूजित होने लायक हो

13.2 श्रीललितासहस्रनामस्तोत्र (38-50)

एकीकरण है

95) कुलयोगिनी – वह जो परिवार से संबंधित है या वह जो अंतिम ज्ञान से संबंधित है

96) अकुला – वह जो कुला से परे है या वह जो किसी ज्ञान से परे है

97) समयान्तस्था – वह जो शिव और शक्ति की मानसिक पूजा के भीतर है

98) समयाचारतत्परा– वह जो समयाचार मैं पसंद करती है।

मूलाधारैक–निलया ब्रह्मग्रन्थि–विभेदिनी ।
मणि–पूरान्तरुदिता विष्णुग्रन्थि–विभेदिनी ।। ३८ ।।

99) मूलाधारैकनिल्या – वह जो मूलाधार में मौजूद है मूलाधार में, जो चार पंखुड़ियों वाले कमल के रूप में कुंडल सोता है।

100) ब्रह्मग्रन्थिविभेदिनी – वह जो ब्रह्मा दादी में टाई तोड़ता है।

101) मणिपूरान्तरूदिता – वह मणि बेचारा चक्र में मौजूद है जिसने अपने वित्त में पूरे कपड़े पहने थे

102) विष्णुग्रन्थिविभेदिनी – वह जो विष्णु दादी के संबंधों को तोड़ता है।

टिप्पणी

आज्ञा–चक्रान्तरालस्था रुद्रग्रन्थि–विभेदिनी ।
सहस्राराम्बुजारूढा सुधा–साराभिवर्षिणी ।। ३९ ।।

103) आज्ञाचक्रान्तरालस्था–वह जो आदेश देता है, उसके रूप में दो नेत्रों के बीच रहता है

104) रुद्रग्रन्थिविभेदिनी – वह जो रुद्र दादी के संबंधों को तोड़ती है।

105) सहस्राराम्बुजारूढा – वह सहस्रार जिस पर चढ़ा है वह हजार पंखुड़ियों वाला कमल है जो परम जागृति का बिंदु है।

106) सुधासाराभिवर्षिणी – वह जो सहस्रार प से हमारी सभी नसों में अमृत प्रवाह बनाता है।

तडिल्लता–समरुचिः षट्चक्रोपरि–संस्थिता ।
महासक्तिः कुण्डलिनी बिसतन्तु–तनीयसी ।। ४० ।।

107) तडिल्लतासमरुचिः – वह जो बिजली की लकीर की तरह चमकता है

108) षट्चक्रोपरिसंस्थिता – वह जो मूलाधार से शुरू होने वाले छह पहियों में सबसे ऊपर है

109) महासक्तिः – वह जो अपने भक्तों द्वारा पूजा करना पसंद करती है

110) कुण्डलिनी – वह जो कुंडलिनी के रूप में है

111) बिसतन्तुतनीयसी – वह जो कमल से धागे के समान पतला है

भवानी भावनागम्या भवारण्य–कुठारिका ।
भद्रप्रिया भद्रमूर्ति भक्त–सौभाग्यदायिनी ।। ४१ ।।

112) भवानी – वह जो मनुष्य के नियमित जीवन को जीवन देती है या वह जो भगवान शिव की पत्नी है

113) भावनागम्या – वह जो सोचकर प्राप्त किया जा सकता है

114) भवारण्यकुठारिका – वह जो कुल्हाड़ी की तरह है वह दुनिया के दयनीय जीवन को काटने के लिए उपयोग किया जाता है

115) भद्रप्रिया – वह जो अपने भक्तों की भलाई करने में रुचि रखती है

116) भद्रमूर्ति – वह सब अच्छा है

117) भक्तसौभग्यदायिनी – वह जो अपने भक्तों को सभी सौभाग्य और सौभाग्य प्रदान करती है

भक्तिप्रिया भक्तिगम्या भक्तिवश्या भयापहा ।
शाम्भवी शारदाराध्या शर्वाणी शर्मदायिनी ।। ४२ ।।

118) भक्तिप्रिया – वह जो (भक्ति से प्रसन्न और प्रसन्न) हो

टिप्पणी

119) भक्तिगम्या – वह जो केवल भक्ति से प्राप्त होता है

120) भक्तिवश्या – वह जो भक्ति द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है

121) भयापहा – वह जो भय को दूर करती है

122) शाम्भवी – वह जो शंभू (शिवा) से विवाहित है

123) शारदाराध्या – वह जो शरद ऋतु के दौरान मनाए जाने वाले नवरात्रि के दौरान पूजा की जानी है

124) शर्वाणी – वह जो सरवर के रूप में भगवान शिव की पत्नी है

125) शर्मदायिनी – वह जो सुख देता है

शाङ्करी श्रीकरी साध्वी शरच्चन्द्र–निभानना ।

शातोदरी शान्तिमती निराधारा निरञ्जना ।। ४३ ।।

126) शाङ्करी – वह शंकर की पत्नी है

127) श्रीकरी – वह जो धन और खुशी के सभी रूपों को देती है

128) साध्वी – वह जो अपने पति के लिए सदा समर्पित है

129) शरच्चन्द्रनिभानना – वह जिसके पास शरद ऋतु में चाँद जैसा चेहरा है

130) शातोदरी – वह जिसके पास एक पतला पेट है

131) शान्तिमती – वह जो शांतिप्रिय है

132) निराधारा – वह जिसे अपने लिए किसी सहारे की आवश्यकता नहीं है

133) निरञ्जना – वह जो किसी दोष या निशान से रहित हो

निर्लेपा निर्मला नित्या निराकारा निराकुला ।
निर्गुणा निष्कला शान्ता निष्कामा निरुपप्लवा ।। ४४ ।।

134) निर्लेपा – वह जिसे कोई लगाव नहीं है

135) निर्मला – वह जो स्पष्टता की पहचान है या वह जो किसी गंदगी से रहित है

136) नित्या – वह जो स्थायी रूप से स्थिर है

137) निराकरा – वह जिसका कोई आकार नहीं है

138) निराकुला – वह जो भ्रमित लोगों द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता है

139) निर्गुणा – वह जो किसी भी विशेषता से परे है

140) निष्कामा – वह जो विभाजित नहीं है

141) शान्ता – वह जो शांति है

142) निष्कामा – वह जिसकी कोई इच्छा नहीं है

143) निरूपप्लवा – वह जो कभी नष्ट नहीं होता

नित्यमुक्ता निर्विकारा निष्प्रपञ्चा निराश्रया ।
नित्यशुद्धा नित्यबुद्धा निरवद्या निरन्तरा ।। ४५ ।।

144) नित्यमुक्ता – वह जो हमेशा के लिए दुनिया के बंधनों से मुक्त हो

145) निर्विकारा – वह कभी भी परिवर्तन से नहीं गुजरी

146) निष्प्रपञ्चा – वह जो इस दुनिया से परे है

147) निराक्षया – वह जिसे सहारे की जरूरत नहीं है

148) नित्यशुद्धा – वह जो हमेशा के लिए साफ हो

149) नित्यबुद्धा – वह जो हमेशा के लिए है

150) निरवद्या – वह जो कभी आरोपी नहीं हो सकता

151) निरन्तरा – वह जो निरंतर है

निष्कारणा निष्कलङ्का निरुपाधि निरीश्वरा ।
नीरागा रागमथनी निर्मदा मदनाशिनी ।। ४६ ।।

152) निष्कारणा – वह जिसके पास कारण नहीं है

153) निष्कलङ्का – वह जिसके पास दोष नहीं है

154) निरुपार्धि – वह जिसके पास आधार नहीं है

155) निरीश्वरा – वह जो किसी को नियंत्रित करने वाला नहीं है

156) नीरगा – वह जिसकी कोई इच्छा नहीं है

157) रागमथनी – वह जो हमसे इच्छाओं को दूर करता है

158) निर्मदा – वह जिसके पास कोई दृढ़ विश्वास नहीं है

159) मदनाशिनी – वह जो विश्वासों को नष्ट कर देता है

निश्चिन्ता निरहंकारा निर्मोहा मोहनाशिनी ।

निर्ममा ममताहन्त्री निष्पापा पापनाशिनी ।। ४७ ।।

160) निश्चिन्ता – वह जो चिंतित नहीं है

161) निरहंकारा – वह जिसके पास अहंकार नहीं है

162) निर्मोहा – वह जिसे कोई जुनून नहीं है

163) मोहनाशिनी – वह जोश को नष्ट कर देता है

164) निर्ममा – वह जो स्वार्थी भावना नहीं रखता है

165) ममताहन्त्री – वह जो स्वार्थ का नाश करता है

टिप्पणी

166) निष्पापा – वह जिसके पास कोई पाप नहीं है

167) पापनाशिनी – वह जो पाप को नष्ट करता है

निष्क्रोधा क्रोधशमनी निर्लोभा लोभनाशिनी ।
निःसंशया संशयघ्नी निर्भवा भवनाशिनी ।। ४८ ।।

168) निष्क्रोधा – वह जो क्रोध से रहित है

169) क्रोधशमनी – वह जो क्रोध का नाश करता है

170) निर्लोभा – वह जो दुखी नहीं है

171) लोभनाशिनी – वह जो दुख दूर करता है

172) निःसंशया– उसे कोई संदेह नहीं है

173) संशयघ्नी – वह जो संदेह को दूर करता है

174) निर्भवा – वह जिसके पास दूसरा जन्म नहीं है

175) भवनाशिनी – वह जो हमारी मदद करता है उसका दूसरा जन्म नहीं है

निर्विकल्पा निराबाधा निर्भेदा भेदनाशिनी ।
निर्नाशा मृत्युमथनी निष्क्रिया निष्परिग्रहा ।। ४९ ।।

176) निर्विकल्पा – वह जो कुछ भी नहीं करता है वह उसकी इच्छा नहीं करता है

177) निराबाधा – वह जो किसी चीज से प्रभावित न हो

178) निर्भेदा – उसे कोई फर्क नहीं पड़ता

179) भेदनाशिनी – वह जो एकता को बढ़ावा देता है

180) निर्नाशा – वह जो मरती नहीं है

181) मृत्युमथनी – वह जो मृत्यु के भय को दूर करती है

182) निष्क्रिया – वह जिसके पास कोई काम नहीं है

183) निष्परिग्रहा – वह जो दूसरों की मदद स्वीकार नहीं करती

निस्तुला नीलचिकुरा निरपाया निरत्यया ।
दुर्लभा दुर्गमा दुर्गा दुःखहन्त्री सुखप्रदा ।। ५० ।।

184) निस्तुला – वह जिसके पास तुलना करने के लिए कुछ भी नहीं है

185) नीलचिकुरा – वह जिसके पास काले काले बाल हैं

186) निरपाया – वह जो कभी नष्ट नहीं होता

187) निरत्यया – वह अपने द्वारा बनाए गए नियमों की सीमा नहीं लांघती

188) दुर्लभा – वह जो प्राप्त करना मुश्किल है

189) दुर्गमा – वह जो आसानी से पास नहीं हो सकता

190) दुर्गा – वह जो नौ साल की लड़की है, जो दुर्गा है

191) दुःखहन्त्री – वह जो दुखों को दूर करता है

192) सुखप्रदा – वह जो सुख और खुशी देता है

पाठगत प्रश्न– 13.1

(1) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. .....–रथारूढ–सर्वायुध–परिष्कृता ।
2. भण्डसैन्य–.....–शक्ति–विक्रम–हर्षिता ।
3. महागणेश–निर्भिन्न–.....–प्रहर्षिता ।
4. हर–नेत्राग्नि–संदग्ध–काम–..... ।
5. मूल–मन्त्रात्मिका मूलकूटत्रय–..... ।
6. कुलाङ्गना कुलान्तस्था ..... कुलयोगिनी ।
7. मूलाधारैक–..... ब्रह्मग्रन्थि–विभेदिनी ।
8. .....–समरुचिः षट्चक्रोपरि–संस्थिता ।
9. ..... भक्तिगम्या भक्तिवश्या भयापहा ।

10. शाङ्करी ..... साध्वी शरच्चन्द्र–निभानना ।

11. निर्लेपा निर्मला नित्या ..... निराकुला ।

आपने क्या सीखा?

- श्लोको का उच्चारण करना।
- देवी ललीता के लिए प्रयोग किये गये विशेषण शब्दों का अर्थज्ञान
- देवी ललीता की विशेषताएं।

पाठांत प्रश्न

(1) नीचे दिये गये पदों का हिन्दी का अर्थ लिखिए

a) परिष्कृता

b) प्रहर्षिता

c) कुलयोगिनी

d) मूलकूटत्रय

e) ब्रह्मग्रन्थि

f) भयापहा

उत्तरमाला

13.1

(1)

1. चक्रराज
2. वधोद्युक्त
3. विघ्नयन्त्र
4. सञ्जीवनौषधिः
5. कलेबरा
6. कौलिनी
7. निलया
8. तडिल्लता
9. भक्तिप्रिया
10. श्रीकरी
11. निराकारा